🪔 दिवाली ऑफ़र: भाई दूज (12 नवंबर) तक हर रिपोर्ट पर अतिरिक्त 20% छूट, प्रति ग्राहक अधिकतम 3 रिपोर्ट। भुगतान पर अपने आप लागू। **रिपोर्ट देखें →**

लग्न: उगती राशि। दशा: ग्रहों से जुड़ी समय की अवधि। नक्षत्र: चंद्रमा के पथ का एक भाग।

नमूना रिपोर्ट · काल्पनिक व्यक्ति

आरव शर्मा की संपूर्ण वार्षिक रिपोर्ट 2027

2027 में आपके लिए क्या है, जनवरी से दिसंबर तक। आपकी अपनी कुंडली से, तारीख़ों, प्रबलता और उपायों के साथ।

जन्म	स्थान	लग्न	राशि · नक्षत्र
15 अगस्त 1991, 06:40	Jaipur, Rajasthan, India	सिंह	तुला · चित्रा 3

इस रिपोर्ट में

01 आपकी मुख्य भविष्यवाणियाँ एक नज़र में

02 आपका 2027 एक नज़र में

03 2027 में आपकी दशाएँ

04 2027 में आपके वर्षफल

05 2027 में शनि, गुरु, राहु और केतु

06 2027 के ग्रहण और वक्री ग्रह

07 2027 में करियर और काम

08 2027 में धन, संपत्ति और समृद्धि

09 2027 में प्रेम, विवाह और रिश्ते

10 2027 में परिवार, घर और संतान

11 2027 में सेहत और कल्याण

12 2027 में शिक्षा, यात्रा और आध्यात्मिक विकास

13 2027 महीना-दर-महीना

14 2027 की शुभ और सावधानी की अवधियाँ

15 2027 के उपाय

16 यह रिपोर्ट कैसे बनी

01 आपकी मुख्य भविष्यवाणियाँ एक नज़र में

आरव जी, 2027 आपके लिए **बदलाव का साल** है। 26 अगस्त 2027 को सोलह साल से चल रही गुरु की महादशा (ग्रह की बड़ी समय-अवधि) पूरी होती है। उसी दिन शनि की उन्नीस साल की महादशा शुरू होती है। साल का पहला हिस्सा पुराने काम समेटने और खर्च संभालने का है। दूसरा हिस्सा, खासकर जून के आख़िर से दिसंबर तक, भाग्य, आमदनी, साझेदारी और करियर में पहचान का है।

हर अवधि के साथ उसकी **प्रबलता** लिखी है: **प्रबल** (कई संकेत एक साथ), **मध्यम** (साफ़ पर सीमित संकेत) या **हल्का** (मददगार संकेत)। ये संभावनाओं की खिड़कियाँ हैं, गारंटी नहीं।

कब	क्या	क्यों (एक पंक्ति में)	प्रबलता	कुंडली किसका संकेत देती है
25 जून – 20 अक्टूबर 2027	भाग्य का साथ, आमदनी में बढ़त, लंबी यात्रा, ऊँची पढ़ाई	गोचर में शनि मेष (नवम भाव) में और गुरु सिंह (लग्न, चंद्र से एकादश) में; नवम भाव पर दोहरा गोचर	प्रबल	बड़े प्रस्ताव, नई भूमिका, तीर्थ; नौकरी बदलाव में अगली भूमिका पहले पक्की करना
26 नवंबर – 31 दिसंबर 2027	करियर में पहचान, बचत, परिवार में शुभ अवसर	गोचर में गुरु कन्या (द्वितीय) में; दशम और द्वितीय भाव पर दोहरा गोचर; शनि–शनि दशा का आरंभ	प्रबल	पद या ज़िम्मेदारी बढ़ना, बचत को मज़बूत करना, सोना रखना
26 अगस्त – 20 अक्टूबर 2027	विवाह की बात, बिज़नेस साझेदारी	सप्तमेश शनि की महादशा-अंतर्दशा; सप्तम भाव पर दोहरा गोचर	प्रबल	रिश्ते को औपचारिक रूप देना, साझेदारी के अनुबंध
15 मई – 28 जून 2027	करियर में दिखना, इंटरव्यू, प्रस्तुति	गोचर में सूर्य, बुध और शुक्र वृषभ (दशम, 37 बिंदु) से गुज़रते हैं	मध्यम	अपना काम सामने रखना, वरिष्ठों से संवाद
7 अक्टूबर – 18 नवंबर 2027	संपत्ति, घर, वाहन	गोचर में चतुर्थेश मंगल अपनी राशि वृश्चिक (चतुर्थ भाव) में	मध्यम	संपत्ति या वाहन की खरीद, घर का नवीनीकरण
20 अक्टूबर – 26 नवंबर 2027	संतान, पढ़ाई, रचनात्मक काम	पंचम भाव पर दोहरा गोचर	मध्यम	गर्भधारण की योजना, परीक्षा, रचनात्मक प्रोजेक्ट
24 जनवरी – 2 जून 2027	बीमा, कर, वसीयत, शोध, सेहत की जाँच	अष्टम भाव पर दोहरा गोचर (शनि मीन में, गुरु कर्क से दृष्टि)	मध्यम	बीमा, वसीयत और कर के मामले निपटाना, नियमित जाँच
24 जनवरी – 25 जून 2027	खर्च बढ़ना, विदेशी संपर्क	गोचर में गुरु कर्क (द्वादश, 22 बिंदु) में	मध्यम	विदेश से जुड़े काम और वीज़ा; खर्च पर नज़र
10 जनवरी – 1 अप्रैल 2027	स्वभाव, ऊर्जा और रिश्तों में सावधानी	गोचर में मंगल लग्न (सिंह) में वक्री	मध्यम	धैर्य से बात, जल्दबाज़ी से बचाव, वाहन चलाते समय सतर्कता
26 फ़रवरी – 31 दिसंबर 2027 (संधि 26 फ़रवरी 2028 तक)	बड़े फ़ैसलों में धैर्य	गुरु से शनि महादशा की संधि (दशा बदलने का जोड़)	मध्यम	बड़े फ़ैसले सोच-समझकर, काग़ज़ात की दोबारा जाँच

02 आपका 2027 एक नज़र में

आपकी पहचान: लग्न (जन्म के समय पहले उदित राशि) सिंह 6°18′, मघा नक्षत्र में। चंद्र राशि तुला, चित्रा नक्षत्र का तीसरा चरण।

साल का मूल स्वर

आरव जी, आपकी जन्म कुंडली में सिंह लग्न में चार ग्रह एक साथ बैठे हैं: मंगल, बुध, गुरु और शुक्र। यही आपकी कुंडली की सबसे बड़ी पहचान है। आप स्वभाव से आगे बढ़कर ज़िम्मेदारी लेने वाले और अपनी बात ठसक से रखने वाले हैं। आपके चंद्र का नक्षत्र चित्रा "चमकते रत्न" का प्रतीक है और इसके देवता त्वष्टा, दिव्य शिल्पकार, हैं। इसलिए आपमें चीज़ों को गढ़ने, सुंदर ढाँचा खड़ा करने और कारीगरी की गहरी समझ है।

2027 इसी शिल्पकार के लिए **नींव बदलने का साल** है। पुरानी इमारत का आख़िरी हिस्सा पूरा होता है और नई इमारत की पहली ईंट रखी जाती है।

दशा का बदलाव

1 जनवरी – 26 अगस्त 2027: गुरु महादशा में राहु अंतर्दशा का अंतिम हिस्सा। जन्म कुंडली में गुरु आपके पंचम (बुद्धि, संतान) और अष्टम (अचानक बदलाव, छिपे विषय) भाव का स्वामी है और लग्न में बैठा है। राहु जन्म कुंडली में पंचम भाव (धनु) में है।

26 अगस्त 2027 से: शनि महादशा और शनि अंतर्दशा, जो 29 अगस्त 2030 तक चलेगी। जन्म कुंडली में शनि छठे (प्रतियोगिता, सेवा) और सातवें (विवाह, साझेदारी) भाव का स्वामी है और अपनी राशि मकर में छठे भाव में बैठा है।

दशा संधि 26 फ़रवरी 2027 से 26 फ़रवरी 2028 तक है। विस्तार अध्याय "आपकी दशाएँ" में है।

बड़े धीमे गोचर

शनि: गोचर में 2 जून तक मीन में, जो लग्न से अष्टम और चंद्र से छठा भाव है। 2 जून से 20 अक्टूबर तक मेष में, जो लग्न से नवम और चंद्र से सप्तम भाव है। फिर साल के अंत तक वापस मीन में।

गुरु: गोचर में 24 जनवरी से 25 जून तक कर्क (द्वादश) में। 25 जून से 26 नवंबर तक सिंह यानी आपके लग्न में, जो चंद्र से एकादश (लाभ) भाव है। फिर कन्या (द्वितीय) में।

राहु और केतु: पूरे साल गोचर में राहु मकर (लग्न से छठा, चंद्र से चौथा) में और केतु कर्क (लग्न से बारहवाँ, चंद्र से दसवाँ) में।

2027 में **न साढ़ेसाती है, न ढैया।**

वर्षफल का केंद्र

ताजिक वर्षफल (सालाना कुंडली) में मुंथा 15 अगस्त 2027 तक वर्षफल कुंडली के पहले भाव में है, यानी ध्यान आप पर, आपकी सेहत और आपके प्रयास पर है। 15 अगस्त 2027 से मुंथा वर्षफल कुंडली के ग्यारहवें भाव में आती है। लाभ, मित्र और इच्छा-पूर्ति के लिए यह बहुत शुभ स्थिति मानी जाती है।

ईमानदार आकलन

साल की सबसे मज़बूत अवधियाँ 25 जून से 20 अक्टूबर (भाग्य और आमदनी) और 26 नवंबर से 31 दिसंबर (करियर और बचत) हैं। धैर्य की ज़रूरत जनवरी से मार्च में है, जब जन्म लग्न पर गोचर का मंगल वक्री है, और दशा बदलने के आसपास जुलाई से सितंबर में। साल का पहला आधा हिस्सा खर्च बढ़ाता है। दूसरा आधा उसकी भरपाई के रास्ते खोलता है।

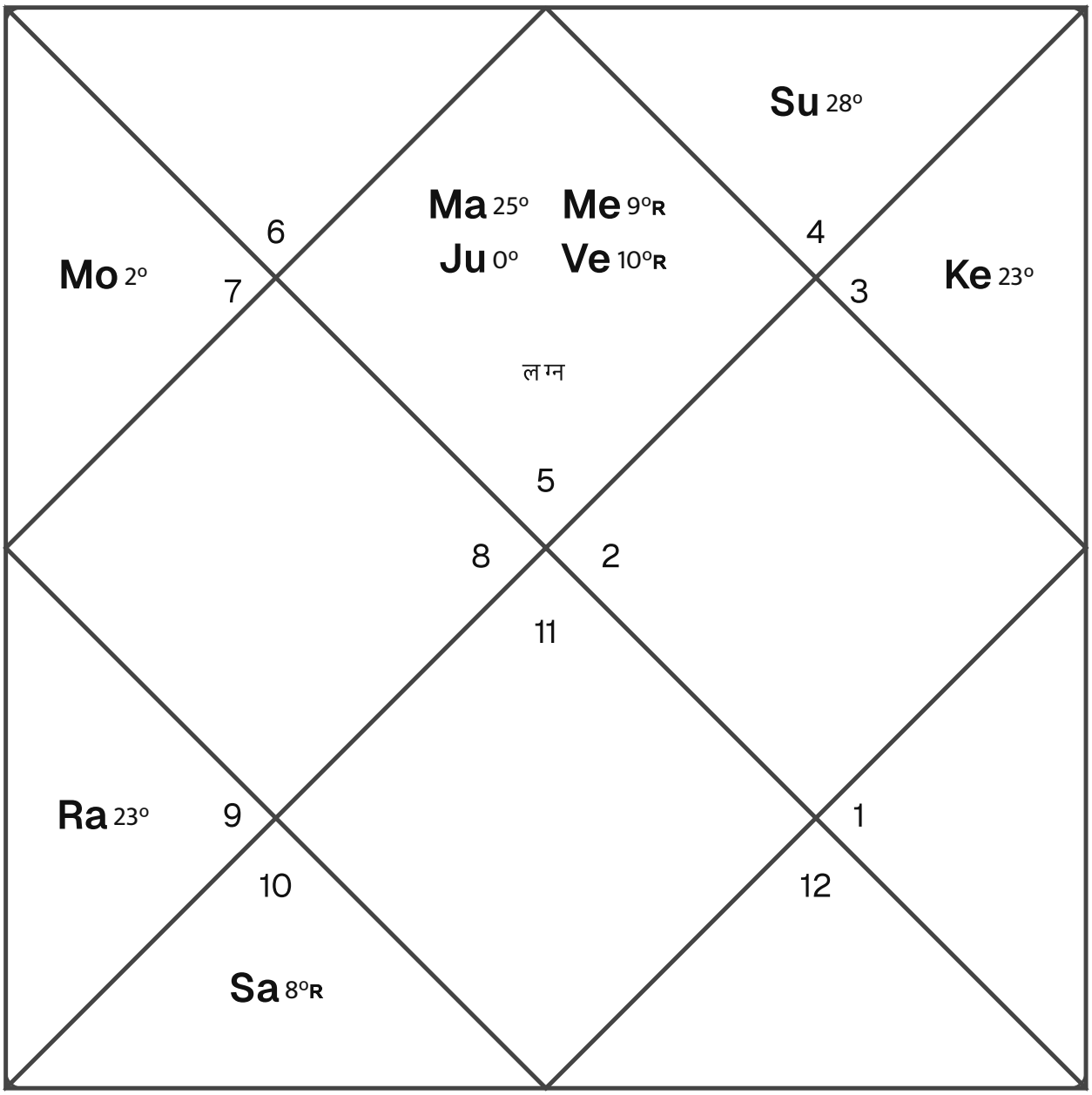
आपके लिए इसका अर्थ

24 जनवरी – 25 जून 2027 (मध्यम): खर्च और विदेश से जुड़े काम बढ़ने का संकेत है। *क्यों:* गोचर का गुरु द्वादश भाव कर्क में है। कुंडली इस अवधि में खर्च का हिसाब रखना और विदेशी संपर्कों को आगे बढ़ाना अनुकूल दिखाती है।

25 जून – 20 अक्टूबर 2027 (प्रबल): भाग्य और आमदनी का सबसे अच्छा दौर। *क्यों:* नवम भाव पर दोहरा गोचर है और गोचर का गुरु आपके लग्न में है।

26 अगस्त 2027: जीवन की नई अवस्था शुरू होती है। शनि की दशा नियम से काम, मेहनत और साझेदारी के ज़रिए फल देती है।

26 नवंबर – 31 दिसंबर 2027 (प्रबल): करियर में पहचान और बचत का संकेत है। *क्यों:* दशम और द्वितीय भाव पर दोहरा गोचर है।



▶ कुंडली की तालिका देखें

आपकी गणना की गई कुंडलियाँ। दशमांश (D10) लग्न तुला है। इसकी कुंडली करियर अध्याय में है।

03 2027 में आपकी दशाएँ

विंशोत्तरी दशा जीवन को ग्रहों की बारी-बारी चलने वाली अवधियों में बाँटती है। महादशा बड़ी अवधि है, अंतर्दशा उसके भीतर की उप-अवधि है और प्रत्यंतर दशा उसके भीतर की और छोटी अवधि है। 2027 में दोनों स्तरों पर बदलाव होता है।

महादशा: गुरु (26 अगस्त 2011 – 26 अगस्त 2027)

आपकी जन्म कुंडली में गुरु सिंह राशि के 0°08′ पर लग्न में बैठा है। मित्र राशि है, पर सूर्य के पास होने से अस्त है। गुरु पंचम (बुद्धि, संतान, पूर्व पुण्य) और अष्टम (आयु, अचानक बदलाव, शोध, विरासत) का स्वामी है। लग्न में मंगल और शुक्र के साथ बैठकर गुरु **राजयोग** बनाता है। मंगल और बुध के साथ **धनयोग** बनाता है। पिछले सोलह साल आपकी पढ़ाई, सोच और पहचान गढ़ने के रहे हैं। अस्त होने से गुरु का फल कभी-कभी देर से या अधूरा मिला। 2027 में यह दशा अपने अंतिम आठ महीने चलाती है।

अंतर्दशा: राहु (1 अप्रैल 2025 – 26 अगस्त 2027)

आपकी जन्म कुंडली में राहु धनु राशि (गुरु की राशि) में पंचम भाव में है। भाव चलित (भावों की सटीक सीमा वाली कुंडली) में राहु छठे भाव में खिसकता है। इसलिए यह अंतर्दशा दो रूपों में चलती है:

प्रतियोगिता, विरोधियों और रोज़ के काम में जीतने की ताक़त, जो छठे भाव की भूमिका है।

पंचम भाव की बेचैनी: जोखिम भरे फ़ैसलों की ओर खिंचाव, संतान और पढ़ाई से जुड़ी चिंताएँ, और अपारंपरिक विचार।

राहु का स्वामी गुरु लग्न में है, इसलिए यह दौर आपकी महत्वाकांक्षा को तेज़ करता है।

2027 की प्रत्यंतर दशाएँ, क्रम से

1. गुरु–राहु–शुक्र (16 अक्टूबर 2026 – 11 मार्च 2027)

स्थिति: जन्म कुंडली में शुक्र तृतीय (साहस, हुनर, संवाद) और दशम (करियर, प्रतिष्ठा) का स्वामी है। लग्न में शत्रु राशि सिंह में वक्री है।

क्या लाता है: काम में रचनात्मक प्रोजेक्ट, बातचीत और प्रस्तुति। शुक्र शत्रु राशि में वक्री है, इसलिए पुराने काम दोहराने और अधूरी बातें सुलझाने का स्वर भी रहता है।

प्रबलता: 1 जनवरी – 11 मार्च 2027 काम के प्रोजेक्ट के लिए **हल्का** मददगार संकेत है।

2. गुरु–राहु–सूर्य (11 मार्च – 24 अप्रैल 2027)

स्थिति: जन्म कुंडली में सूर्य आपका लग्नेश (लग्न का स्वामी) है और कर्क में द्वादश भाव में मित्र राशि में बैठा है। भाव चलित में सूर्य लग्न में आता है।

क्या लाता है: आत्म-छवि, सरकारी या अधिकारी वर्ग से जुड़े काम, और भीतर की थकान या खर्च दोनों साथ उभरते हैं। आराम और दिनचर्या पर ध्यान इस छोटे दौर की माँग है।

3. गुरु–राहु–चंद्र (24 अप्रैल – 6 जुलाई 2027)

स्थिति: जन्म कुंडली में चंद्र द्वादश भाव का स्वामी है और तुला में तृतीय भाव में वर्गोत्तम है। वर्गोत्तम का अर्थ है कि जन्म कुंडली और नवांश दोनों में एक ही राशि, जो मज़बूती का संकेत है।

क्या लाता है: छोटी यात्राएँ, भाई-बहनों से संपर्क और लेखन या बोलने का काम। मन की हलचल भी रहती है। साथ में विदेश से जुड़े काम या खर्च भी, क्योंकि चंद्र द्वादश का स्वामी है।

4. गुरु–राहु–मंगल (6 जुलाई – 26 अगस्त 2027)

स्थिति: जन्म कुंडली में मंगल चतुर्थ (घर, संपत्ति) और नवम (भाग्य, पिता) का स्वामी है। इसलिए वह आपका **योगकारक** है, यानी केंद्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी, जो शुभ फल देने वाला ग्रह माना जाता है। मंगल लग्न में मित्र राशि में बैठा है।

क्या लाता है: जोश, संपत्ति की बातचीत और भाग्य से जुड़े फ़ैसले। यह दौर दशा संधि के सबसे नाज़ुक हिस्से में पड़ता है। इसलिए जोश को योजना में बदलना सबसे अच्छा रहता है।

5. शनि–शनि–शनि (26 अगस्त 2027 – 16 फ़रवरी 2028)

स्थिति: जन्म कुंडली में शनि अपनी राशि मकर में छठे भाव में वक्री है और **हर्ष योग** बनाता है। यह विपरीत राजयोग का एक रूप है, जिसमें छठे भाव का स्वामी छठे भाव में ही हो।

क्या लाता है: प्रतियोगिता में जीत, कर्ज़ या विवाद पर काबू और सेवा या नौकरी में मेहनत का पक्का फल। शनि सप्तमेश भी है, इसलिए विवाह और साझेदारी का विषय ज़ोर पकड़ता है।

सिंह लग्न के लिए अर्थ: शनि लग्नेश सूर्य का बड़ा शत्रु है। इसलिए यह दशा आसान नहीं, पर ईमानदार है। जितना धैर्य और नियम से काम, उतना फल।

दशा संधि

गुरु से शनि महादशा का जोड़ 26 अगस्त 2027 को है। उसकी संधि अवधि 26 फ़रवरी 2027 से 26 फ़रवरी 2028 तक है। संधि में पुराना ग्रह फल देना कम करता है और नया पूरी ताक़त नहीं पकड़ता। इसलिए बड़े फ़ैसलों (नौकरी छोड़ना, बड़ा कर्ज़, अचानक स्थान बदलना) में धैर्य कुंडली का संकेत है। संधि का सबसे संवेदनशील हिस्सा जुलाई से सितंबर 2027 है।

योगिनी दशा

योगिनी दशा भी 2027 में बदलती है:

मंगला (स्वामी चंद्र): 28 नवंबर 2026 – 29 नवंबर 2027। यह मन, परिवार और भावनात्मक जुड़ाव को सक्रिय रखती है।

पिंगला (स्वामी सूर्य): 29 नवंबर 2027 से 28 नवंबर 2029 तक। यह आपके लग्नेश की योगिनी है। साल के अंत से आत्मविश्वास और नेतृत्व का स्वर उभरता है, जो दिसंबर के दोहरे गोचर के साथ मेल खाता है।

आपके लिए इसका अर्थ

1 जनवरी – 11 मार्च 2027 (हल्का): काम के रचनात्मक प्रोजेक्ट और प्रस्तुति का संकेत है। *क्यों:* शुक्र प्रत्यंतर, और शुक्र दशमेश है। पुराने काम को पूरा करना इस अवधि में ज़्यादा अनुकूल है।

26 फ़रवरी – 31 दिसंबर 2027 (मध्यम): बड़े फ़ैसलों में धैर्य का समय। *क्यों:* महादशा संधि। कुंडली संकेत देती है कि नौकरी बदलनी हो तो अगली भूमिका पहले पक्की हो, फिर पुरानी छोड़ी जाए।

26 अगस्त – 31 दिसंबर 2027 (मध्यम): प्रतियोगिता, विवाद और नौकरी के मामलों में आपका पलड़ा भारी रहने का संकेत है। *क्यों:* शनि–शनि दशा, हर्ष योग, और गोचर का राहु छठे भाव में।

विंशोत्तरी महादशाएँ

मंगल 1991–1993	राहु 1993–2011	गुरु 2011–2027
शनि 2027–2046	बुध 2046–2063	केतु 2063–2070
शुक्र 2070–2090	सूर्य 2090–2096	चंद्र 2096–2106

04 2027 में आपके वर्षफल

ताजिक पद्धति में हर साल सूर्य के अपनी जन्म-स्थिति पर लौटने के क्षण की एक **वर्षफल कुंडली** बनती है। 2027 को दो वर्षफल छूते हैं। नीचे के सभी भाव **वर्षफल कुंडली के भाव** हैं, जन्म कुंडली के नहीं।

पहला वर्षफल: 1 जनवरी – 15 अगस्त 2027

सौर वापसी का क्षण: 15 अगस्त 2026, सुबह 05:56 (भारतीय समय), यानी 00:26 (विश्व समय)। यह रात्रि कुंडली है।

विषय	स्थिति
वर्ष लग्न	कर्क
मुंथा	कर्क में, वर्षफल कुंडली के पहले भाव में; स्वामी चंद्र
पदाधिकारी	मुंथेश चंद्र, जन्म लग्नेश सूर्य, वर्ष लग्नेश चंद्र, दिन-रात्रि स्वामी सूर्य

मुख्य स्थितियाँ:

पहला भाव: वर्षफल कुंडली में सूर्य, बुध और गुरु तीनों वर्ष लग्न कर्क में हैं। गुरु का वर्ष लग्न में होना ताजिक में बहुत शुभ माना जाता है। यह विवेक, सम्मान और सेहत की रक्षा का संकेत है। सूर्य जन्म लग्नेश है, इसलिए उसका वर्ष लग्न में होना आत्मविश्वास बढ़ाता है।

मुंथा पहले भाव में: यह साल अपने स्वभाव, सेहत और प्रयास को केंद्र में रखता है।

चंद्र दोहरी भूमिका में: वह मुंथेश भी है और वर्ष लग्नेश भी। वर्षफल कुंडली में वह सिंह में दूसरे भाव में केतु के साथ है। परिवार और वाणी के मामलों में भावनाएँ तेज़ रहती हैं, और खर्च या बचत को लेकर मन डोलता है।

शनि नवम भाव में: वर्षफल कुंडली में शनि मीन में है। भाग्य धीरे और मेहनत से खुलता है, और पिता या गुरुजनों के प्रति ज़िम्मेदारी बढ़ती है।

अन्य भाव: वर्षफल कुंडली में शुक्र कन्या में तीसरे भाव में है, जो हुनर और संवाद में मिठास देता है। वर्षफल 2026 (15 अगस्त 2026 से) में राहु कुंभ में आठवें भाव में अचानक बदलावों की ओर इशारा करता है। वर्षफल 2026 (15 अगस्त 2026 से) में मंगल मिथुन में बारहवें भाव में खर्च और नींद पर ध्यान माँगता है।

यह वर्षफल जनवरी से 15 अगस्त 2027 को ढकता है, जिसमें गुरु–राहु की आख़िरी प्रत्यंतर दशाएँ चलती हैं। संदेश साफ़ है: अपने आप को मज़बूत रखें, फिर बाहर का फल अपने आप आता है।

दूसरा वर्षफल: 15 अगस्त – 31 दिसंबर 2027

सौर वापसी का क्षण: 15 अगस्त 2027, दोपहर 12:08 (भारतीय समय), यानी 06:38 (विश्व समय)। यह दिवा कुंडली है।

विषय	स्थिति
वर्ष लग्न	तुला
मुंथा	सिंह में, वर्षफल कुंडली के ग्यारहवें भाव में; स्वामी सूर्य
पदाधिकारी	मुंथेश सूर्य, जन्म लग्नेश सूर्य, वर्ष लग्नेश शुक्र, दिन-रात्रि स्वामी चंद्र

मुख्य स्थितियाँ:

मुंथा ग्यारहवें भाव में: ताजिक में यह सबसे शुभ स्थानों में गिनी जाती है। यह आमदनी, मित्रों की मदद और इच्छाएँ पूरी होने का संकेत है। मुंथा आपकी जन्म लग्न राशि सिंह में ही पड़ी है। इसलिए यह साल आपके अपने स्वभाव और नेतृत्व को लाभ में बदलने का है।

सूर्य की दोहरी भूमिका: सूर्य मुंथेश भी है और जन्म लग्नेश भी। वर्षफल कुंडली में वह कर्क में दसवें भाव में है, जो करियर और प्रतिष्ठा में आगे आने का स्पष्ट योग है।

ग्यारहवाँ भाव: वर्षफल कुंडली में गुरु और बुध सिंह में ग्यारहवें भाव में हैं। लाभ, नेटवर्क और व्यापारिक बुद्धि को इससे बल मिलता है।

दसवाँ भाव: वर्ष लग्नेश शुक्र वर्षफल कुंडली में कर्क में दसवें भाव में सूर्य और केतु के साथ है। करियर में सक्रियता रहती है। केतु के साथ होने से कभी-कभी "क्या यही मेरी राह है" जैसा सवाल भी उठता है।

सातवाँ भाव: वर्षफल कुंडली में शनि मेष में सातवें भाव में है। साझेदारी और विवाह गंभीर, ज़िम्मेदार रूप लेते हैं। यह जन्म कुंडली के सप्तमेश शनि की दशा शुरू होने से सीधा मेल खाता है।

चौथा भाव: वर्षफल कुंडली में चंद्र और राहु मकर में चौथे भाव में हैं। घर में बदलाव, बेचैनी या कुछ नया करने की इच्छा जगती है।

बारहवाँ भाव: वर्षफल कुंडली में मंगल कन्या में बारहवें भाव में है, जो खर्च और नींद पर ध्यान माँगता है।

यह वर्षफल 15 अगस्त से दिसंबर 2027 (और आगे अगस्त 2028 तक) को ढकता है। साल के उत्तरार्ध में करियर और लाभ के जो संकेत गोचर से मिलते हैं, यह वर्षफल उन्हें और पक्का करता है।

आपके लिए इसका अर्थ

1 जनवरी – 15 अगस्त 2027: यह अपने ऊपर काम करने का समय है: सेहत, कौशल और आत्मविश्वास। इस दौर का मुख्य शुभ संकेत गुरु का वर्ष लग्न में होना है। प्रबलता की खिड़कियाँ ऊपर तय हैं।

25 जून – 20 अक्टूबर 2027 (प्रबल): लाभ और भाग्य का दौर। 15 अगस्त के बाद ग्यारहवें भाव की मुंथा इसे और बल देती है।

26 नवंबर – 31 दिसंबर 2027 (प्रबल): करियर में पहचान का संकेत है। *क्यों:* वर्षफल कुंडली में मुंथेश सूर्य दसवें भाव में है और दशम पर दोहरा गोचर है।

26 अगस्त – 20 अक्टूबर 2027 (प्रबल): साझेदारी और विवाह की बात का संकेत है। वर्षफल कुंडली में शनि सप्तम भाव में है, जो इसे गंभीरता देता है।

05 2027 में शनि, गुरु, राहु और केतु

धीमे ग्रह साल का मौसम तय करते हैं। हर राशि के साथ उसके **सर्वाष्टकवर्ग बिंदु** दिए हैं। यह आठ ग्रहों से मिलने वाली शुभ रेखाओं का जोड़ है। लगभग 28 को औसत मानें। इससे ऊपर का अंक गोचर को सहारा देता है और नीचे का अंक उसे थोड़ा कमज़ोर करता है। आपकी कुंडली का कुल जोड़ 337 है।

शनि

अवधि	गोचर राशि	लग्न से	चंद्र से	बिंदु
1 जनवरी – 2 जून	मीन	अष्टम	छठा	27
2 जून – 20 अक्टूबर	मेष	नवम	सप्तम	28
20 अक्टूबर – 31 दिसंबर	मीन	अष्टम	छठा	27

गोचर का शनि 9 अगस्त से 24 दिसंबर तक वक्री है। 20 अक्टूबर को वह मीन में लौटता है और 24 दिसंबर को मार्गी होता है।

साढ़ेसाती और ढैया: 2027 में न साढ़ेसाती है, न ढैया। पिछली चौथी ढैया 17 जनवरी 2023 को ख़त्म हो चुकी है। अगली (अष्टम ढैया) 8 अगस्त 2029 से है। साढ़ेसाती 22 अक्टूबर 2038 से शुरू होगी।

मीन (चंद्र से छठा): शास्त्रों में चंद्र से तीसरे, छठे और ग्यारहवें भाव का शनि शुभ माना गया है। यह विरोधियों पर जीत, कर्ज़ घटाने और रोज़ की मेहनत का फल देता है। लग्न से यह अष्टम भाव है, जो अचानक बदलाव, शोध, बीमा, विरासत और छिपे विषयों को छूता है। इसलिए साल के दोनों मीन-चरण पुराने कागज़ात, कर और वसीयत जैसे विषय निपटाने के लिए उपयुक्त हैं।

मेष (लग्न से नवम, चंद्र से सप्तम): यह भाग्य, पिता, गुरुजन और लंबी यात्रा का भाव है। नवम भाव का स्वामी मंगल जन्म कुंडली में लग्न में योगकारक है, और शनि का वहाँ से गुजरना भाग्य को ज़मीनी, मेहनत भरा रूप देता है। चंद्र से सप्तम होने से रिश्तों में गंभीरता आती है।

दशा से मेल: 26 अगस्त से शनि ही महादशा और अंतर्दशा दोनों का स्वामी बनता है। अपनी दशा के आरंभ में शनि नवम और अष्टम भाव में वक्री चलता है, इसलिए शुरुआती महीने पुनर्विचार और नींव मज़बूत करने के होते हैं।

गुरु

अवधि	गोचर राशि	लग्न से	चंद्र से	बिंदु
1 – 24 जनवरी	सिंह	लग्न	एकादश	30
24 जनवरी – 25 जून	कर्क	द्वादश	दशम	22
25 जून – 26 नवंबर	सिंह	लग्न	एकादश	30
26 नवंबर – 31 दिसंबर	कन्या	द्वितीय	द्वादश	21

गोचर का गुरु 13 दिसंबर 2026 से 13 अप्रैल 2027 तक वक्री है।

कर्क (22 बिंदु): यहाँ जन्म कुंडली का सूर्य है। गुरु खर्च, विदेश, आध्यात्म और नींद का भाव जगाता है। बिंदु कम होने से खर्च आसानी से बढ़ता है। चंद्र से दशम होने से काम में बदलाव की हलचल रहती है।

सिंह (30 बिंदु): यह गुरु का सबसे शुभ चरण है। गोचर का गुरु जन्म लग्न के चारों ग्रहों पर से गुज़रता है। राजयोग और धनयोग, जो जन्म कुंडली में सिंह में बनते हैं, गोचर से फिर जागते हैं। चंद्र से एकादश गुरु लाभ का पक्का शास्त्रीय संकेत है। सिंह से गुरु की पंचम, सप्तम और नवम दृष्टि धनु (पंचम), कुंभ (सप्तम) और मेष (नवम) पर पड़ती है।

कन्या (21 बिंदु): परिवार, वाणी और बचत का भाव। बिंदु कम हैं, इसलिए बचत नियम से काम से ही टिकती है, पर दोहरे गोचर का सहारा मिलता है।

दशा से मेल: गुरु महादशा का स्वामी है। अपनी दशा के अंतिम महीनों में लग्न पर लौटना ऐसा है मानो जाते-जाते आशीर्वाद दे रहा हो।

राहु और केतु

राहु: पूरा 2027 गोचर में मकर में है, जो लग्न से छठा भाव है और जहाँ 32 बिंदु हैं। यही वह भाव है जहाँ जन्म कुंडली का शनि अपनी राशि में बैठा है। छठा राहु शास्त्रों में बहुत शुभ माना गया है। यह प्रतियोगिता, मुक़दमों और विरोधियों पर जीत देता है। चंद्र से यह चौथा भाव है, इसलिए घर और मन में बेचैनी या बदलाव की चाह रहती है।

केतु: गोचर में कर्क में है, जो लग्न से बारहवाँ और चंद्र से दसवाँ भाव है और जहाँ 22 बिंदु हैं। यह आध्यात्मिक झुकाव, एकांत और विदेश से जुड़ा अलगाव देता है। काम में "अर्थ" की तलाश भी जगाता है।

दशा से मेल: अगस्त तक राहु की अपनी अंतर्दशा चलती है, और गोचर का राहु छठे भाव में होने से उसका सबसे अच्छा रूप सामने आता है।

दोहरा गोचर

शास्त्रीय मान्यता है कि किसी भाव का फल तब सबसे अधिक मिलता है जब शनि और गुरु दोनों उस पर एक साथ असर डालें। इसे **दोहरा गोचर** कहते हैं। 2027 में:

भाव	अवधि (2027 के भीतर)	विषय
अष्टम	24 जनवरी – 2 जून (सीधा प्रभाव); 26 नवंबर – 31 दिसंबर	बीमा, विरासत, शोध
सप्तम	2 जून – 20 अक्टूबर	विवाह, साझेदारी
नवम	25 जून – 20 अक्टूबर (सीधा प्रभाव)	भाग्य, पिता, लंबी यात्रा
एकादश, तृतीय	25 जून – 20 अक्टूबर	आमदनी, साहस, भाई-बहन
पंचम	20 अक्टूबर – 26 नवंबर (सीधा प्रभाव)	संतान, पढ़ाई
दशम, द्वितीय	26 नवंबर – 31 दिसंबर (सीधा प्रभाव)	करियर, बचत

आपके लिए इसका अर्थ

24 जनवरी – 2 जून 2027 (मध्यम): बीमा, कर और वसीयत के मामले निपटाने के लिए यह समय अनुकूल है। *क्यों:* अष्टम भाव पर दोहरा गोचर।

24 जनवरी – 25 जून 2027 (मध्यम): खर्च और विदेशी संपर्क बढ़ने का संकेत है। *क्यों:* गोचर का गुरु द्वादश भाव कर्क में है।

25 जून – 20 अक्टूबर 2027 (प्रबल): भाग्य और आमदनी का दौर। *क्यों:* नवम पर सीधा और एकादश पर दोहरा गोचर, साथ में गोचर का गुरु लग्न में।

20 अक्टूबर – 26 नवंबर 2027 (मध्यम): संतान और पढ़ाई के विषय उभरते हैं। *क्यों:* पंचम भाव पर दोहरा गोचर।

26 नवंबर – 31 दिसंबर 2027 (प्रबल): करियर में पहचान और बचत। *क्यों:* दशम और द्वितीय भाव पर दोहरा गोचर।

पूरा साल: गोचर का राहु छठे भाव में विरोध और प्रतियोगिता में आपका साथ देता है।

06 2027 के ग्रहण और वक्री ग्रह

ग्रहण

तिथि	प्रकार	राशि	लग्न से	चंद्र से	जन्मस्थान से दिखेगा?
6 फ़रवरी 2027	वलयाकार सूर्यग्रहण	मकर	छठा	चौथा	नहीं
21 फ़रवरी 2027	उपच्छाया चंद्रग्रहण	सिंह	लग्न	ग्यारहवाँ	हाँ
18 जुलाई 2027	उपच्छाया चंद्रग्रहण	मकर	छठा	चौथा	हाँ
2 अगस्त 2027	पूर्ण सूर्यग्रहण	कर्क	बारहवाँ	दसवाँ	हाँ
17 अगस्त 2027	उपच्छाया चंद्रग्रहण	मकर	छठा	चौथा	नहीं

6 फ़रवरी, सूर्यग्रहण (मकर, छठा भाव):

यह भारतीय समय से रात लगभग 9:29 बजे है और जयपुर से दिखाई नहीं देगा।

जन्म कुंडली के शनि वाली राशि में होने से नौकरी, रोज़ के काम, सेहत की दिनचर्या और विरोधियों का विषय छूता है। चंद्र से चौथा होने से घर का माहौल भी।

न दिखने वाले ग्रहण में परंपरा सूतक का कड़ा पालन नहीं मानती। फिर भी उस शाम शांत रहना और शनि मंत्र का जप उपयोगी माना जाता है।

21 फ़रवरी, चंद्रग्रहण (सिंह, लग्न):

यह भारतीय समय से भोर लगभग 4:42 बजे है और जयपुर से दिखाई देगा। उपच्छाया ग्रहण हल्का होता है।

यह आपके लग्न में होता है, जहाँ जन्म कुंडली के चार ग्रह हैं और गोचर में वक्री मंगल बैठा है। इसलिए शरीर की ऊर्जा, मन और आत्म-छवि पर हल्का असर पड़ता है। चंद्र से ग्यारहवाँ होने से मित्रों और लाभ के मामलों में उतार-चढ़ाव हो सकता है।

पारंपरिक पालन: ग्रहण काल में "ॐ सोमाय नमः" और "ॐ सूर्याय नमः" का जप, ग्रहण के बाद स्नान, और चावल या सफ़ेद वस्त्र का दान।

18 जुलाई, चंद्रग्रहण (मकर, छठा भाव):

यह भारतीय समय से रात लगभग 9:33 बजे है और दिखाई देगा।

काम के दबाव, साथ काम करने वालों और सेहत की दिनचर्या पर ध्यान माँगता है। चंद्र से चौथा होने से घर या माँ से जुड़ी भावनाएँ भी उभरती हैं।

पारंपरिक पालन: जप, ग्रहण के बाद काले तिल और सरसों के तेल का दान।

2 अगस्त, पूर्ण सूर्यग्रहण (कर्क, बारहवाँ भाव):

यह भारतीय समय से दोपहर लगभग 3:36 बजे है और दिखाई देगा। यह साल का सबसे बड़ा ग्रहण है।

यह उसी राशि में है जहाँ जन्म कुंडली में आपका लग्नेश सूर्य बैठा है। इसलिए यह आत्मबल, नींद, खर्च और विदेश के विषय छूता है। चंद्र से दसवाँ होने से करियर को लेकर मन में सवाल उठते हैं।

यह मंगल प्रत्यंतर और दशा संधि के बीच आता है।

पारंपरिक पालन: ग्रहण काल में नया काम शुरू न करने की परंपरा है। "ॐ सूर्याय नमः" या आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ किया जाता है। अगली सुबह गेहूँ, गुड़ या ताँबे का दान।

17 अगस्त, चंद्रग्रहण (मकर, छठा भाव):

यह भारतीय समय से दोपहर लगभग 12:43 बजे है और दिखाई नहीं देगा।

यह वर्षफल बदलने के दो दिन बाद आता है। छठे भाव के विषय फिर हल्के-से उभरते हैं।

वक्री ग्रह

वक्री अवधि (जब ग्रह पीछे चलता दिखे) में कुंडली पुनर्विचार, सुधार और अधूरे काम पूरे करने को अनुकूल मानती है, नई शुरुआत को कम।

ग्रह	अवधि	राशि और भाव	किसकी समीक्षा अनुकूल है
गुरु	13 दिसंबर 2026 – 13 अप्रैल 2027	सिंह (लग्न) से कर्क (द्वादश) तक	पढ़ाई की योजना, सलाहकारों से रिश्ते, खर्च की पहली ज़रूरतें
मंगल	10 जनवरी – 1 अप्रैल 2027	सिंह (लग्न) से कर्क (द्वादश) तक	ग़ुस्से और जल्दबाज़ी पर नज़र, वाहन, संपत्ति के काग़ज़
बुध	9 फ़रवरी – 3 मार्च 2027	कुंभ (सप्तम) से मकर (छठा) तक	अनुबंध, साझेदारी की शर्तें, ऑफ़िस के ईमेल और दस्तावेज़
बुध	10 जून – 5 जुलाई 2027	मिथुन (एकादश)	आमदनी का हिसाब, नेटवर्क, बड़े लेन-देन की शर्तें
शनि	9 अगस्त – 24 दिसंबर 2027	मेष (नवम) से मीन (अष्टम) तक	लंबी योजनाएँ, पिता या गुरु से जुड़े ज़िम्मेदारी, बीमा और कर
बुध	7 – 28 अक्टूबर 2027	तुला (तृतीय) से कन्या (द्वितीय) तक	लिखित संवाद, भाई-बहन से बात, बचत का ढाँचा

ध्यान देने की बातें:

2027 में शुक्र वक्री नहीं होता। रिश्तों और कला में यह अच्छी स्थिरता है।

जन्म कुंडली में बुध (द्वितीय और एकादश का स्वामी) वक्री और अस्त है। इसलिए बुध के वक्री दौर आपके लिए धन और संवाद के मामलों में ख़ास तौर पर दोबारा जाँच के समय बनते हैं।

आपके लिए इसका अर्थ

10 जनवरी – 1 अप्रैल 2027 (मध्यम): स्वभाव, ऊर्जा और रिश्तों में सावधानी का समय। *क्यों:* गोचर का मंगल लग्न में वक्री है और 21 फ़रवरी का ग्रहण भी लग्न में है। इस अवधि में कुंडली संयम और धीमी गति को अनुकूल मानती है।

17 जुलाई – 17 अगस्त 2027 (हल्का): आराम, नींद और एकांत की ज़रूरत का संकेत है। *क्यों:* गोचर का सूर्य द्वादश भाव में है और 2 अगस्त का पूर्ण सूर्यग्रहण भी द्वादश में है।

तीनों बुध वक्री दौर: अनुबंधों पर हस्ताक्षर से पहले दोबारा पढ़ना कुंडली का संकेत है।

07 2027 में करियर और काम

जन्म कुंडली की नींव

दशम भाव: आपका दशम भाव (करियर, प्रतिष्ठा) वृषभ है। इस पर **37 बिंदु** हैं, जो आपके सबसे मज़बूत भावों में से एक है।

दशमेश शुक्र: जन्म कुंडली में शुक्र लग्न में शत्रु राशि सिंह में वक्री है। वह गुरु और मंगल के साथ राजयोग बनाता है। आपका करियर आपकी निजी छवि से जुड़ा है: आप जहाँ होते हैं, वहाँ दिखते हैं। शुक्र वक्री और शत्रु राशि में है, इसलिए करियर में कई बार पुराने रास्ते पर लौटना या दोबारा कोशिश करना पड़ता है।

चंद्र से दशम: यह कर्क है, जहाँ जन्म कुंडली का सूर्य बैठा है। प्रशासन, अधिकार और विदेश से जुड़े काम आपकी प्रवृत्ति में हैं।

एकादश भाव: एकादश भाव मिथुन पर 41 बिंदु हैं, जो कुंडली में सबसे ज़्यादा है। आपकी मेहनत आमदनी में बदलने की क्षमता बहुत अच्छी है।

षष्ठ भाव: छठे भाव मकर में शनि अपनी राशि में बैठा है और 32 बिंदु हैं। यह सेवा, प्रतियोगिता और टीम चलाने की ताक़त है।

दशमांश (करियर की वर्ग कुंडली)

दशमांश का लग्न तुला है और चंद्र भी उसी लग्न में है। लोगों से संतुलित व्यवहार और जनसंपर्क आपकी करियर-पूँजी है।

दशमांश में मंगल मेष में अपनी राशि में सातवें भाव में है। साझेदारी, क्लाइंट से डील और बिज़नेस में जोश दिखाने की क्षमता मज़बूत है।

दशमांश में गुरु सिंह में ग्यारहवें भाव में है, जो लाभ और वरिष्ठ नेटवर्क का संकेत है।

दशमांश का दसवाँ भाव कर्क है, जिसमें राहु है। तकनीकी, विदेशी या नए ढंग के काम की ओर झुकाव दिखता है।

दशमांश में शनि वृश्चिक में शत्रु राशि में दूसरे भाव में है। शनि दशा में काम का फल पैसे के रूप में धीरे और मेहनत से आता है।

दशा का करियर से संबंध

राहु अंतर्दशा (26 अगस्त तक): भाव चलित में राहु छठे भाव में है। यह प्रतियोगिता में आगे निकलने का दौर है।

शनि दशा (26 अगस्त से): जन्म कुंडली में शनि छठे भाव का स्वामी होकर वहीं बैठा है (हर्ष योग) और सप्तमेश भी है। नौकरी में स्थायी ज़िम्मेदारी, प्रबंधन, क़ानूनी या सेवा क्षेत्र, और बिज़नेस साझेदारी इस दशा के स्वाभाविक रास्ते हैं।

2027 के गोचर

गुरु: 24 जनवरी से 25 जून तक गोचर का गुरु कर्क में है, जो चंद्र से दशम है। काम में बदलाव की हलचल रहती है, पर लग्न से द्वादश होने से खर्च भी। 25 जून से 26 नवंबर तक गोचर का गुरु लग्न में है, जो आत्मविश्वास और पहचान देता है।

शनि: 2 जून से 20 अक्टूबर तक गोचर का शनि नवम में है, जो भाग्य से जुड़ी नौकरी या प्रस्ताव का संकेत है।

दोहरा गोचर: 26 नवंबर से दिसंबर तक दशम भाव पर दोहरा गोचर है, जो साल का करियर-शिखर है।

सूर्य: गोचर का सूर्य 15 मई से 15 जून तक वृषभ (दशम) में है और 17 अगस्त से 17 सितंबर तक सिंह (लग्न) में।

मंगल: गोचर का मंगल 26 अप्रैल से 4 जुलाई तक फिर लग्न में मार्गी है, जो जोश से काम आगे बढ़ाने का समय है।

आपके लिए इसका अर्थ

1 जनवरी – 11 मार्च 2027 (हल्का): रचनात्मक प्रोजेक्ट और प्रस्तुतियों का संकेत है। *क्यों:* दशमेश शुक्र का प्रत्यंतर। नए जोखिम की जगह चल रहे काम को चमकाना अनुकूल है।

15 मई – 28 जून 2027 (मध्यम): इंटरव्यू, प्रमोशन की बात और वरिष्ठों के सामने काम रखने का समय। *क्यों:* गोचर में सूर्य, बुध और शुक्र दशम (37 बिंदु) से गुज़रते हैं।

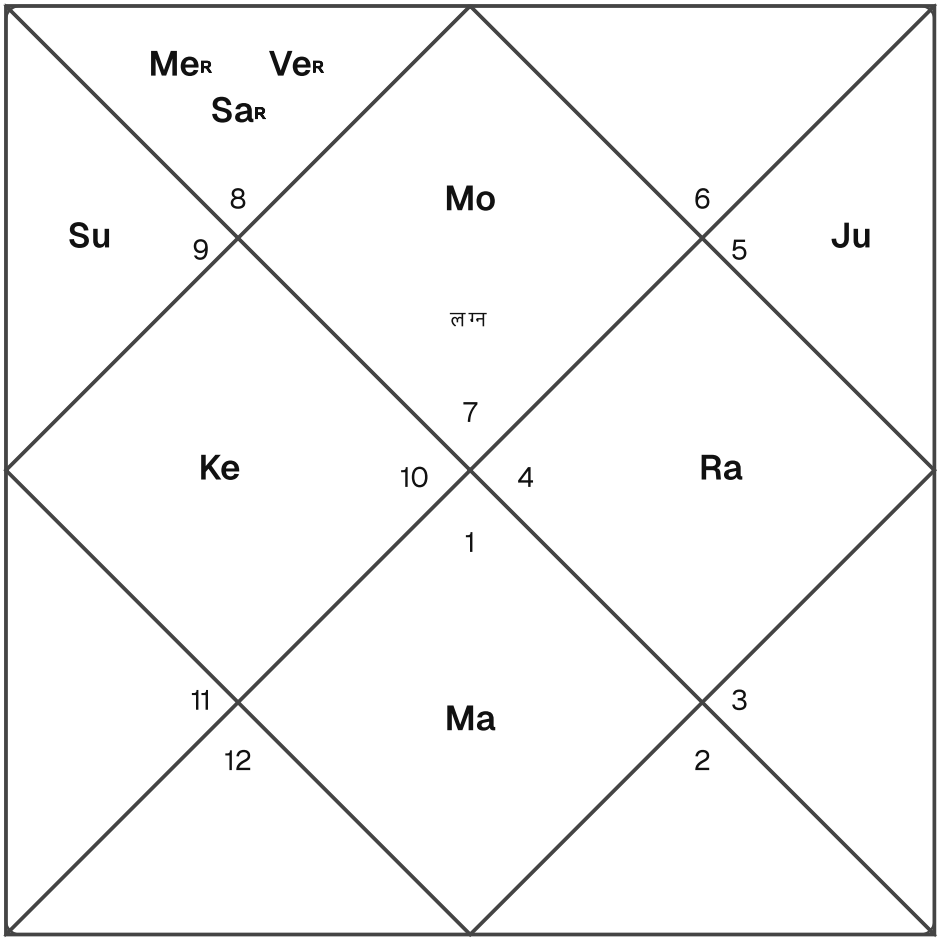
25 जून – 20 अक्टूबर 2027 (प्रबल): नौकरी बदलाव, बड़ा प्रस्ताव या भाग्य से आया अवसर। *क्यों:* नवम पर सीधा दोहरा गोचर और गोचर का गुरु लग्न में। दशा संधि के कारण कुंडली अगली भूमिका पहले पक्की करना अनुकूल दिखाती है।

26 अगस्त – 20 अक्टूबर 2027 (प्रबल): बिज़नेस साझेदारी और बड़े अनुबंध का संकेत है। *क्यों:* सप्तमेश शनि की दशा और सप्तम पर दोहरा गोचर। 9 अगस्त से गोचर का शनि वक्री है, इसलिए शर्तों की दोबारा जाँच अनुकूल है।

26 अगस्त – 31 दिसंबर 2027 (मध्यम): प्रतियोगी परीक्षा, विभागीय विवाद और टीम-प्रबंधन में बढ़त का संकेत है। *क्यों:* शनि–शनि दशा, हर्ष योग, और गोचर का राहु छठे भाव में।

26 नवंबर – 31 दिसंबर 2027 (प्रबल): पद, पहचान या नई ज़िम्मेदारी का संकेत है। *क्यों:* दशम पर सीधा दोहरा गोचर और वर्षफल कुंडली में मुंथेश सूर्य दसवें भाव में।

सावधानी: 10 जून से 5 जुलाई तक (बुध वक्री, एकादश) अनुबंध और भुगतान की शर्तें दोबारा पढ़ना अनुकूल है।



▶ कुंडली की तालिका देखें

दशमांश (D10), करियर और पद की वर्ग कुंडली।

08 2027 में धन, संपत्ति और समृद्धि

जन्म कुंडली के धन-योग

द्वितीय भाव: द्वितीय भाव (बचत, परिवार) कन्या है, जिस पर 21 बिंदु हैं। धनेश बुध जन्म कुंडली में लग्न में है, पर वक्री और अस्त है। कमाई की क्षमता अच्छी है, पर बचत अपने आप नहीं टिकती, उसे ढाँचा चाहिए।

एकादश भाव: एकादश मिथुन पर 41 बिंदु हैं और इसका स्वामी भी बुध है। गोचर में जन्म कुंडली का केतु यहीं है। लाभ कई रास्तों से आता है, पर कुछ लाभ अचानक आकर चले भी जाते हैं।

धनयोग: गुरु, बुध और मंगल लग्न में साथ हैं, यानी पंचमेश, धनेश-लाभेश और भाग्येश एक जगह। अपनी बुद्धि और पहचान से धन कमाने का पक्का योग है।

वेशि योग: सूर्य से दूसरे भाव में पाँच ग्रह हैं (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र)। यह मेहनत से कमाई और समाज में साख का योग है।

भाव चलित: भाव चलित में मंगल दूसरे भाव में जाता है। योगकारक का धन भाव से जुड़ना संपत्ति और परिवार के धन को बल देता है।

होरा कुंडली: होरा (धन की वर्ग कुंडली) में सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु और शुक्र सिंह यानी सूर्य की होरा में हैं। अपने मेहनत और अधिकार से कमाया धन आपके लिए अधिक फलदायी है।

चतुर्थ भाव: चतुर्थ भाव (संपत्ति) वृश्चिक पर 27 बिंदु हैं। इसका स्वामी मंगल लग्न में योगकारक है।

अष्टम भाव: अष्टम मीन पर 27 बिंदु हैं। इसका स्वामी गुरु लग्न में है, जो बीमा या विरासत के मामलों में संरक्षण का संकेत है।

कुंडली में छह सक्रिय योग हैं: योगकारक, राजयोग, धनयोग, हर्ष, वेशि और केदार योग। केमद्रुम योग भंग है, इसलिए गिना नहीं गया।

दशा और गोचर के ट्रिगर

राहु अंतर्दशा: जन्म कुंडली में राहु पंचम भाव में है, जो सट्टा और जोखिम का भाव है। इसलिए अगस्त तक कुंडली जोखिम भरे दाँव से दूरी को अनुकूल मानती है।

शनि दशा: यह धीमी पर टिकाऊ कमाई की ओर ले जाती है।

गोचर का गुरु: साल के पहले हिस्से में द्वादश (खर्च) में और बीच के हिस्से में चंद्र से एकादश (लाभ) में।

आपके लिए इसका अर्थ

24 जनवरी – 25 जून 2027 (मध्यम): खर्च बढ़ने का संकेत है, खासकर यात्रा, सेहत, विदेश या आराम पर। *क्यों:* गोचर का गुरु द्वादश (22 बिंदु) में और केतु भी द्वादश में। कुंडली इस अवधि में बड़े खर्च की सूची बनाकर चलना और नया कर्ज़ टालना अनुकूल दिखाती है।

24 जनवरी – 2 जून 2027 (मध्यम): बीमा, कर, वसीयत और पुराने बकाया निपटाने के लिए अनुकूल अवधि। *क्यों:* अष्टम पर दोहरा गोचर।

25 जून – 20 अक्टूबर 2027 (प्रबल): आमदनी में बढ़त, बोनस, नए ग्राहक या पुराना रुका पैसा आने का संकेत है। *क्यों:* गोचर का गुरु लग्न (30 बिंदु) में चंद्र से एकादश, और एकादश पर दोहरा गोचर। गोचर का सूर्य 15 जून से 17 जुलाई तक और शुक्र 28 जून से 22 जुलाई तक एकादश (41 बिंदु) में हैं। 10 जून से 5 जुलाई तक बुध वक्री है, इसलिए हिसाब की दोबारा जाँच अनुकूल है। यह अवधि अतिरिक्त आमदनी से कर्ज़ घटाने के लिए भी अनुकूल दिखती है।

7 अक्टूबर – 18 नवंबर 2027 (मध्यम): संपत्ति या वाहन की खरीद को कुंडली सहारा देती है। *क्यों:* गोचर में चतुर्थेश मंगल अपनी राशि वृश्चिक (चतुर्थ) में, और 27 अक्टूबर से 20 नवंबर तक गोचर का शुक्र भी वहीं। 7 से 28 अक्टूबर तक बुध वक्री है, इसलिए कागज़ात की पूरी जाँच अनुकूल है।

26 नवंबर – 31 दिसंबर 2027 (प्रबल): बचत को मज़बूत करने, पारिवारिक धन और सोना रखने के लिए अनुकूल अवधि। *क्यों:* गोचर का गुरु कन्या (द्वितीय) में और द्वितीय पर सीधा दोहरा गोचर। द्वितीय भाव के बिंदु कम (21) हैं, इसलिए नियमित बचत की आदत ही इस अवसर को टिकाऊ बनाती है।

सावधानी: 26 अगस्त के आसपास, दशा बदलने के समय, बड़े निवेश या कर्ज़ के कागज़ में जल्दबाज़ी से बचाव कुंडली का संकेत है।

ध्यान रहे: यहाँ शेयर, म्यूचुअल फ़ंड या अन्य प्रतिभूतियों पर कोई संकेत नहीं दिया गया है।

09 2027 में प्रेम, विवाह और रिश्ते

जन्म कुंडली के संकेत

सप्तम भाव: आपका सप्तम भाव (विवाह, साझेदारी) कुंभ है, जिस पर 19 बिंदु हैं। यह कुंडली का सबसे कम अंक है। इसका स्वामी शनि जन्म कुंडली में छठे भाव में अपनी राशि में वक्री है। शास्त्रों में ऐसा योग विवाह में परिपक्वता, कभी देर, और रिश्ते को "काम की तरह" निभाने का संकेत देता है। रिश्ता आपकी लगन से मज़बूत होता है, संयोग से नहीं।

शुक्र: विवाह का कारक शुक्र जन्म कुंडली में लग्न में शत्रु राशि में वक्री है, मंगल, बुध और गुरु के साथ। आपमें आकर्षण और आत्मीयता है, पर रिश्ते में अपनी बात ऊपर रखने की प्रवृत्ति भी।

पंचम भाव: पंचम भाव (प्रेम) धनु में जन्म कुंडली का राहु है। आप अपारंपरिक या अलग पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति की ओर खिंच सकते हैं।

नवांश (विवाह की वर्ग कुंडली):

लग्न वृषभ है, जिसका स्वामी शुक्र है, और नवांश में शुक्र कर्क में तीसरे भाव में है।

नवांश का सप्तम भाव वृश्चिक है, जिसमें मंगल अपनी राशि में राहु के साथ है।

नवांश में चंद्र तुला में वर्गोत्तम है, जो मन की स्थिरता देता है।

भावी साथी के संकेत

कुंडली के अनुसार साथी मेहनती, ज़िम्मेदार और व्यावहारिक स्वभाव का दिखता है। यह वर्षफल 2026 में कुंभ के राहु और मीन के शनि का असर है। साथी स्वतंत्र सोच वाला और उम्र या स्वभाव से परिपक्व हो सकता है। नवांश का मंगल साथी को ऊर्जावान, स्पष्टवादी और फ़ैसला लेने वाला बनाता है। राहु पृष्ठभूमि में कुछ अलगपन जोड़ सकता है, जैसे दूसरा शहर, समुदाय या पेशा। शनि छठे भाव में है, इसलिए सेवा, प्रबंधन, सेहत, क़ानून या संगठित नौकरी जैसे क्षेत्रों से जुड़ाव संभव है। परंपरा में कुंभ और शनि पश्चिम दिशा से जुड़े माने जाते हैं।

मंगल दोष

आपकी कुंडली में मंगल दोष **हल्का** है।

लग्न से गिनने पर मंगल पहले भाव में है, इसलिए दोष बनता है।

चंद्र से गिनने पर मंगल ग्यारहवें भाव में है, इसलिए दोष नहीं बनता।

लोकप्रिय मान्यता (शास्त्रीय नियम नहीं) के अनुसार कुछ बातें इसे और हल्का करती हैं: मंगल का सिंह राशि में होना, गुरु का मंगल के साथ होना, और लग्न की स्थिति।

कुंडली मिलान में इसे ध्यान में रखना पर्याप्त है।

आपके लिए इसका अर्थ

10 जनवरी – 1 अप्रैल 2027 (मध्यम): रिश्तों में धैर्य का समय। *क्यों:* गोचर का मंगल लग्न में वक्री है और उसकी सप्तम दृष्टि आपके सप्तम भाव पर है। छोटी बात पर बहस बढ़ सकती है। कुंडली इस समय बात कहने से पहले ठहरना अनुकूल मानती है।

2 जून – 20 अक्टूबर 2027 (मध्यम): अविवाहित हों तो नए व्यक्ति से मिलने और रिश्ते की बात शुरू होने का संकेत है। *क्यों:* सप्तम पर दोहरा गोचर और गोचर का शनि चंद्र से सप्तम में। 25 जून से गोचर के गुरु की सप्तम दृष्टि भी कुंभ पर पड़ती है।

26 अगस्त – 20 अक्टूबर 2027 (प्रबल): विवाह की औपचारिक बात, सगाई या विवाह का संकेत है। विवाहित हों तो रिश्ते में नई ज़िम्मेदारी या साझा बड़े फ़ैसले का संकेत है। *क्यों:* सप्तमेश शनि की महादशा-अंतर्दशा, सप्तम पर दोहरा गोचर, और वर्षफल कुंडली में शनि सप्तम में। 16 अगस्त से 9 सितंबर तक गोचर का शुक्र आपके लग्न में आकर्षण भी बढ़ाता है।

विवाहित जीवन के लिए: 25 जून से 20 अक्टूबर का प्रबल भाग्य-काल साथ में यात्रा या तीर्थ के लिए भी अनुकूल है। दिसंबर में गोचर का गुरु द्वितीय भाव (परिवार) में पारिवारिक मेल-जोल बढ़ाता है।

IO 2027 में परिवार, घर और संतान

जन्म कुंडली के संकेत

चतुर्थ भाव: चतुर्थ भाव (घर, माँ) वृश्चिक पर 27 बिंदु हैं। इसका स्वामी मंगल जन्म कुंडली में लग्न में योगकारक है, इसलिए घर और संपत्ति आपके जीवन में अहम हैं।

तृतीय भाव: तृतीय भाव (भाई-बहन) तुला में जन्म कुंडली का चंद्र वर्गोत्तम है। भाई-बहनों से भावनात्मक जुड़ाव गहरा है। द्रेष्काण (भाई-बहन की वर्ग कुंडली) में भी चंद्र तुला में तीसरे भाव में है, जो इस बात को पक्का करता है।

नवम भाव: नवम भाव (पिता, गुरु) मेष पर 28 बिंदु हैं और इसका स्वामी भी मंगल है।

पंचम भाव: पंचम भाव (संतान) धनु में जन्म कुंडली का राहु है। पंचमेश गुरु लग्न में है, पर अस्त है। संतान के विषय में चिंता या देर संभव है, पर पंचमेश का लग्न में होना संतान से जुड़ाव और सुख का संकेत है।

सप्तांश (संतान की वर्ग कुंडली): लग्न कन्या है। पंचम भाव मकर में मंगल है, और मकर शास्त्रों में मंगल की उच्च राशि मानी जाती है। सप्तांश का पंचमेश शनि सिंह में बारहवें भाव में है। संतान का योग ऊर्जावान है, पर समय और धैर्य माँगता है।

गोचर

गोचर का राहु पूरे साल चंद्र से चौथे भाव (मकर) में है, जिससे घर में बदलाव की चाह या बेचैनी रहती है।

गोचर का शनि 2 जून से 20 अक्टूबर तक नवम में है, जिससे पिता या बुज़ुर्गों के प्रति ज़िम्मेदारी बढ़ती है।

पंचम पर दोहरा गोचर 20 अक्टूबर से 26 नवंबर तक है।

आपके लिए इसका अर्थ

2 जून – 20 अक्टूबर 2027 (मध्यम): पिता, बुज़ुर्गों या गुरुजनों की देखभाल का संकेत है। *क्यों:* गोचर का शनि नवम में, और यही सप्तम भाव पर दोहरे गोचर की अवधि भी है। 9 अगस्त से शनि वक्री है, इसलिए उनकी सेहत की नियमित जानकारी रखना अनुकूल है।

7 अक्टूबर – 18 नवंबर 2027 (मध्यम): घर बदलने, नवीनीकरण या संपत्ति के काम का संकेत है। *क्यों:* गोचर का चतुर्थेश मंगल अपनी राशि में चतुर्थ भाव में।

20 अक्टूबर – 26 नवंबर 2027 (मध्यम): गर्भधारण और संतान से जुड़ी खुशख़बरी के लिए अनुकूल अवधि। *क्यों:* पंचम पर सीधा दोहरा गोचर, और गोचर के गुरु की पंचम दृष्टि धनु पर। इस अवधि के आसपास की योजना में डॉक्टर की सलाह साथ रखना स्वाभाविक है।

26 नवंबर – 31 दिसंबर 2027 (प्रबल): परिवार में शुभ आयोजन और मेल-जोल का संकेत है। *क्यों:* गोचर का गुरु द्वितीय (परिवार) में और द्वितीय पर दोहरा गोचर।

25 जून – 20 अक्टूबर 2027 (प्रबल): भाई-बहनों से साथ का संकेत है। *क्यों:* तृतीय भाव पर दोहरे गोचर की खिड़की, जो इसी प्रबल भाग्य-काल का हिस्सा है।

II 2027 में सेहत और कल्याण

जन्म कुंडली के संकेत

लग्न: लग्न सिंह पर 30 बिंदु हैं और इसमें चार ग्रह हैं। आपकी जीवनी-शक्ति अच्छी है।

मंगल लग्न में: शरीर में गर्मी, तेज़ी और चोट-मोच की प्रवृत्ति रहती है। अधिक काम से थकान भी।

लग्नेश सूर्य: जन्म कुंडली में द्वादश भाव कर्क (22 बिंदु) में है, पर भाव चलित में लग्न में आता है। नींद और आराम की कमी आपकी ऊर्जा को सबसे पहले छूती है।

षष्ठ भाव: छठे भाव में शनि अपनी राशि में है। इससे रोग-प्रतिरोध और धीरज अच्छा रहता है। परंपरा में शनि जोड़ों, हड्डियों और नसों का कारक माना जाता है, इसलिए नियमित व्यायाम और मुद्रा का ध्यान लाभदायक है।

आयु के संकेत: अष्टम भाव मीन पर 27 बिंदु हैं। उसका स्वामी गुरु लग्न में है, और लग्नेश सूर्य मित्र राशि में है। ये तीनों मिलकर अच्छी आयु और संकट से उबरने की क्षमता का संकेत देते हैं। *यह एक ज्योतिषीय संकेत है, चिकित्सीय पूर्वानुमान नहीं।*

2027 के संकेत

2027 में साढ़ेसाती या ढैया नहीं है, जो सेहत के लिए राहत की बात है।

दशा संधि और गोचर में लग्न पर वक्री मंगल ध्यान के मुख्य बिंदु हैं।

आपके लिए इसका अर्थ

10 जनवरी – 1 अप्रैल 2027 (मध्यम): ऊर्जा, ग़ुस्सा, सिर में गर्मी और जल्दबाज़ी से चोट की प्रवृत्ति का संकेत है। *क्यों:* गोचर का मंगल लग्न में वक्री है और 21 फ़रवरी का चंद्रग्रहण भी लग्न में है। इस अवधि में संयमित दिनचर्या, पानी, नींद और सावधानी से वाहन चलाना कुंडली के अनुकूल है।

24 जनवरी – 2 जून 2027 (मध्यम): लंबे समय से टली हुई सेहत की जाँच के लिए अनुकूल अवधि। *क्यों:* अष्टम पर दोहरा गोचर।

17 जुलाई – 17 अगस्त 2027 (हल्का): आराम और नींद की ज़रूरत का संकेत है। *क्यों:* गोचर का सूर्य द्वादश में और 2 अगस्त को पूर्ण सूर्यग्रहण आपके लग्नेश की जन्म-राशि में। उस सप्ताह भारी शारीरिक श्रम कम रखना अनुकूल है।

17 अगस्त – 17 सितंबर 2027 (मध्यम): ऊर्जा और आत्मविश्वास लौटने का संकेत है। *क्यों:* गोचर में सूर्य और गुरु दोनों लग्न में।

26 फ़रवरी – 31 दिसंबर 2027 (मध्यम): दशा संधि के दौरान थकान या मन की बेचैनी का संकेत है। नियमित दिनचर्या इसमें सबसे बड़ा सहारा है।

12 2027 में शिक्षा, यात्रा और आध्यात्मिक विकास

जन्म कुंडली के संकेत

पढ़ाई:

पंचम भाव धनु में राहु है। आप नई, तकनीकी या अपारंपरिक विषयों में तेज़ हैं।

नवम भाव मेष (28 बिंदु) का स्वामी मंगल लग्न में है, इसलिए ऊँची पढ़ाई में अपनी लगन से आगे बढ़ते हैं।

चतुर्विंशांश (शिक्षा की वर्ग कुंडली) में लग्न मकर है और शनि वहाँ अपनी राशि में है। यह अनुशासित, गहरी पढ़ाई का योग है। वहीं मंगल मेष में चतुर्थ भाव में अपनी राशि में है।

विदेश:

द्वादश भाव कर्क में जन्म कुंडली का सूर्य है। इसका स्वामी चंद्र तृतीय (यात्रा) भाव में है।

भाव चलित में केतु बारहवें भाव में जाता है।

विदेश से जुड़ा काम या यात्रा आपकी कुंडली में स्वाभाविक है।

आध्यात्म:

विंशांश (साधना की वर्ग कुंडली) में लग्न मेष है और मंगल उसी लग्न में अपनी राशि में है। साधना में आप कर्मठ हैं, जैसे जप, सेवा और तीर्थ।

विंशांश में गुरु धनु में नवम भाव में है, जो गुरु-कृपा का सुंदर संकेत है।

2027 के गोचर

गोचर का केतु पूरे साल द्वादश भाव में आत्म-सोच-विचार और एकांत की चाह देता है।

गोचर का गुरु पहले हिस्से में द्वादश में और बीच में लग्न में है।

गोचर का शनि 2 जून से 20 अक्टूबर तक नवम में है।

आपके लिए इसका अर्थ

24 जनवरी – 25 जून 2027 (मध्यम): विदेशी संपर्क, वीज़ा, विदेश यात्रा या विदेशी कंपनी से काम का संकेत है। साथ में खर्च भी। *क्यों:* गोचर का गुरु द्वादश में और केतु भी द्वादश में। 13 अप्रैल तक गुरु वक्री है, इसलिए आवेदन के काग़ज़ात अप्रैल के मध्य के बाद अधिक सहज रहते हैं।

25 जून – 20 अक्टूबर 2027 (प्रबल): लंबी यात्रा, ऊँची पढ़ाई में दाख़िला, प्रमाणपत्र-कोर्स और तीर्थ के लिए साल का सबसे अच्छा समय। *क्यों:* नवम पर सीधा दोहरा गोचर और गोचर का शनि नवम में।

20 अक्टूबर – 26 नवंबर 2027 (मध्यम): परीक्षा, लेखन और गहरी पढ़ाई के लिए अनुकूल समय। *क्यों:* पंचम भाव पर दोहरा गोचर।

17 जुलाई – 17 अगस्त 2027 (हल्का): ध्यान, मौन साधना या छोटी आध्यात्मिक रिट्रीट के लिए अनुकूल समय। *क्यों:* गोचर का सूर्य और केतु द्वादश में।

स्थायी रूप से विदेश बसना: इसका संकेत 2027 में मध्यम से अधिक नहीं दिखता। इस साल विदेश से जुड़ाव अधिकतर काम और यात्रा के रूप में है।

13 2027 महीना-दर-महीना

जनवरी 2027

सूर्य: गोचर में 14 जनवरी तक धनु (पंचम) में, फिर मकर (छठा) में।

अन्य ग्रह: 1 जनवरी को शुक्र वृश्चिक (चतुर्थ) में और 29 जनवरी को धनु (पंचम) में जाता है। बुध 9 जनवरी को मकर और 27 जनवरी को कुंभ (सप्तम) में जाता है। 10 जनवरी को गोचर का मंगल लग्न में वक्री होता है। 24 जनवरी को वक्री गुरु कर्क (द्वादश) में लौटता है।

प्रत्यंतर: गुरु–राहु–शुक्र।

काम: दशमेश शुक्र का प्रत्यंतर चल रहे प्रोजेक्ट को सँवारने में मदद करता है (हल्का)।

धन: 24 जनवरी से खर्च बढ़ने का दौर शुरू होता है (मध्यम)।

रिश्ते: 10 जनवरी से मंगल वक्री होने पर धैर्य चाहिए।

सेहत: मकर का सूर्य मध्य जनवरी से रोज़ की दिनचर्या सुधारने में मदद करता है।

अच्छे दिन: 14 से 24 जनवरी, काम और नियम से काम के लिए।

प्रबलता: मध्यम।

फ़रवरी 2027

सूर्य: 13 फ़रवरी तक मकर (छठा) में, फिर कुंभ (सप्तम) में।

अन्य ग्रह: शुक्र 24 फ़रवरी को मकर में जाता है। बुध 9 फ़रवरी को कुंभ में वक्री होता है और 23 फ़रवरी को मकर में लौटता है। मंगल पूरे महीने लग्न में वक्री है।

ग्रहण: 6 फ़रवरी को सूर्यग्रहण (मकर, न दिखने वाला) और 21 फ़रवरी को चंद्रग्रहण (सिंह, लग्न में, दिखने वाला)।

दशा: 26 फ़रवरी से महादशा संधि शुरू होती है। प्रत्यंतर शुक्र का है।

काम: अनुबंध और साझेदारी की शर्तें दोबारा जाँचने का महीना।

धन: बड़े लेन-देन में सावधानी।

रिश्ते: सूर्य सप्तम में और मंगल लग्न में, इसलिए अहं के टकराव से बचाव अनुकूल है।

सेहत: ग्रहण के आसपास आराम।

अच्छे दिन: 3 से 8 फ़रवरी, बुध वक्री से पहले के काम निपटाने के लिए।

प्रबलता: हल्का।

मार्च 2027

सूर्य: 15 मार्च तक कुंभ (सप्तम) में, फिर मीन (अष्टम) में।

अन्य ग्रह: 3 मार्च को बुध मार्गी होता है और 11 मार्च को कुंभ में जाता है। 9 मार्च को वक्री मंगल कर्क (द्वादश) में जाता है। 21 मार्च को शुक्र कुंभ (सप्तम) में आता है।

प्रत्यंतर: 11 मार्च से गुरु–राहु–सूर्य।

काम: लग्नेश सूर्य का प्रत्यंतर आत्मबल लौटाता है, पर सूर्य अष्टम से गुज़र रहा है, इसलिए परदे के पीछे का काम अधिक फलता है।

धन: मंगल द्वादश में है, इसलिए अचानक खर्च पर नज़र।

रिश्ते: 21 मार्च से गोचर का शुक्र सप्तम में रिश्ते में गर्माहट लौटाता है (हल्का)।

सेहत: गर्मी और थकान का ध्यान।

अच्छे दिन: 21 से 31 मार्च, रिश्तों के लिए।

प्रबलता: हल्का।

अप्रैल 2027

सूर्य: 14 अप्रैल तक मीन (अष्टम) में, फिर मेष (नवम) में।

अन्य ग्रह: 1 अप्रैल को मंगल मार्गी होता है और 26 अप्रैल को फिर सिंह (लग्न) में आता है। 13 अप्रैल को गुरु मार्गी होता है। शुक्र 15 अप्रैल को मीन में जाता है। बुध 5 अप्रैल को मीन और 22 अप्रैल को मेष में जाता है।

प्रत्यंतर: 24 अप्रैल से गुरु–राहु–चंद्र।

काम: वक्री दौर ख़त्म होने से रुकी फ़ाइलें आगे बढ़ती हैं।

धन: बीमा और कर के काम निपटाने का अच्छा महीना (अष्टम का दोहरा गोचर)।

रिश्ते: संवाद सहज होता है।

सेहत: ऊर्जा लौटने लगती है।

अच्छे दिन: 14 से 30 अप्रैल, भाग्य और गुरुजनों के आशीर्वाद के लिए।

प्रबलता: मध्यम।

मई 2027

सूर्य: 15 मई तक मेष (नवम) में, फिर वृषभ (दशम) में।

अन्य ग्रह: 10 मई को शुक्र मेष में जाता है। बुध 6 मई को वृषभ (दशम) और 23 मई को मिथुन (एकादश) में जाता है। मंगल लग्न में मार्गी है।

प्रत्यंतर: चंद्र।

काम: 15 मई से करियर में दिखने का दौर शुरू होता है (मध्यम)। इंटरव्यू और प्रस्तुति के लिए अच्छा समय।

धन: बुध की एकादश में स्थिति से कमाई के नए रास्ते की बात होती है।

रिश्ते: चंद्र प्रत्यंतर भावनाओं को गहरा करता है।

सेहत: छोटी यात्राओं की थकान का ध्यान।

अच्छे दिन: 15 से 31 मई।

प्रबलता: मध्यम।

जून 2027

सूर्य: 15 जून तक वृषभ (दशम) में, फिर मिथुन (एकादश) में।

अन्य ग्रह: 2 जून को शनि मेष (नवम) में जाता है। शुक्र 3 जून को वृषभ (दशम) और 28 जून को मिथुन (एकादश) में जाता है। 10 जून को बुध मिथुन में वक्री होता है। 25 जून को गुरु सिंह (लग्न) में लौटता है।

प्रत्यंतर: चंद्र।

काम: करियर में दिखने का दौर 28 जून तक चलता है। 25 जून से साल का प्रबल भाग्य-काल शुरू होता है।

धन: आमदनी की बढ़त का संकेत है। बुध वक्री के कारण हिसाब की जाँच अनुकूल है।

रिश्ते: 2 जून से सप्तम पर दोहरा गोचर है (मध्यम), नए परिचय का समय।

सेहत: अच्छी।

अच्छे दिन: 25 से 30 जून।

प्रबलता: प्रबल।

जुलाई 2027

सूर्य: 17 जुलाई तक मिथुन (एकादश) में, फिर कर्क (द्वादश) में।

अन्य ग्रह: 4 जुलाई को मंगल कन्या (द्वितीय) में जाता है। 5 जुलाई को बुध मार्गी होता है और 30 जुलाई को कर्क में जाता है। 22 जुलाई को शुक्र कर्क में जाता है।

दशा: 6 जुलाई से गुरु–राहु–मंगल प्रत्यंतर।

ग्रहण: 18 जुलाई को चंद्रग्रहण (मकर, छठा भाव, दिखने वाला)।

काम: भाग्य-काल जारी है। योगकारक मंगल का प्रत्यंतर जोश देता है। दशा संधि का नाज़ुक हिस्सा भी शुरू होता है।

धन: मंगल धन भाव में है, जिससे पारिवारिक या संपत्ति से जुड़े खर्च की बात उठती है।

रिश्ते: स्थिर।

सेहत: 17 जुलाई से आराम की ज़रूरत (हल्का)।

अच्छे दिन: 1 से 16 जुलाई।

प्रबलता: मध्यम।

अगस्त 2027

सूर्य: 17 अगस्त तक कर्क (द्वादश) में, फिर सिंह (लग्न) में।

अन्य ग्रह: 9 अगस्त को शनि मेष में वक्री होता है। बुध 14 अगस्त को सिंह और 30 अगस्त को कन्या में जाता है। 16 अगस्त को शुक्र सिंह (लग्न) में आता है। 24 अगस्त को मंगल तुला (तृतीय) में जाता है।

ग्रहण: 2 अगस्त को पूर्ण सूर्यग्रहण (कर्क, दिखने वाला) और 17 अगस्त को चंद्रग्रहण (मकर, न दिखने वाला)।

दशा और वर्षफल: 15 अगस्त को नया वर्षफल शुरू होता है, जिसमें मुंथा ग्यारहवें भाव में है। **26 अगस्त को शनि महादशा, शनि अंतर्दशा और शनि प्रत्यंतर शुरू होते हैं।**

काम: साझेदारी और बड़े अनुबंध का प्रबल दौर 26 अगस्त से शुरू होता है।

धन: बड़े फ़ैसले दशा बदलने के बाद, ठहरकर।

रिश्ते: 26 अगस्त से विवाह-बात का प्रबल दौर।

सेहत: 17 अगस्त से ऊर्जा लौटती है (मध्यम)।

अच्छे दिन: 17 से 31 अगस्त।

प्रबलता: मध्यम।

सितंबर 2027

सूर्य: 17 सितंबर तक सिंह (लग्न) में, फिर कन्या (द्वितीय) में।

अन्य ग्रह: 9 सितंबर को शुक्र कन्या में जाता है। 21 सितंबर को बुध तुला में जाता है। गोचर का शनि नवम में वक्री और गुरु लग्न में है।

प्रत्यंतर: शनि।

काम: आत्मविश्वास और नेतृत्व का महीना। भाग्य-काल अपने शिखर पर है।

धन: लाभ का प्रवाह बना रहता है।

रिश्ते: गोचर का शुक्र 9 सितंबर तक लग्न में है, जिससे आकर्षण बढ़ता है।

सेहत: 17 सितंबर तक ऊर्जा अच्छी।

अच्छे दिन: 1 से 17 सितंबर।

प्रबलता: प्रबल।

अक्टूबर 2027

सूर्य: 17 अक्टूबर तक कन्या (द्वितीय) में, फिर तुला (तृतीय) में।

अन्य ग्रह: शुक्र 3 अक्टूबर को तुला और 27 अक्टूबर को वृश्चिक में जाता है। 7 अक्टूबर को मंगल वृश्चिक (चतुर्थ) में जाता है। बुध 7 अक्टूबर को तुला में वक्री होता है, 21 अक्टूबर को कन्या में लौटता है और 28 अक्टूबर को मार्गी होता है। 20 अक्टूबर को वक्री शनि मीन में लौटता है।

प्रत्यंतर: शनि।

काम: 20 अक्टूबर तक भाग्य-काल और साझेदारी का दौर चलता है।

धन: 7 अक्टूबर से संपत्ति और वाहन का दौर (मध्यम)। बुध वक्री के कारण कागज़ात की जाँच अनुकूल है।

रिश्ते: 20 अक्टूबर तक विवाह-बात का प्रबल दौर।

संतान और पढ़ाई: 20 अक्टूबर से पंचम पर दोहरा गोचर (मध्यम)।

अच्छे दिन: 1 से 6 अक्टूबर और 28 से 31 अक्टूबर।

प्रबलता: प्रबल।

नवंबर 2027

सूर्य: 16 नवंबर तक तुला (तृतीय) में, फिर वृश्चिक (चतुर्थ) में।

अन्य ग्रह: बुध 5 नवंबर को तुला और 25 नवंबर को वृश्चिक में जाता है। 18 नवंबर को मंगल धनु में जाता है। 20 नवंबर को शुक्र धनु में जाता है। 26 नवंबर को गुरु कन्या (द्वितीय) में जाता है।

योगिनी: 29 नवंबर से पिंगला (सूर्य)।

प्रत्यंतर: शनि।

काम: 26 नवंबर से करियर-शिखर (प्रबल)।

धन: 18 नवंबर तक संपत्ति का दौर। 26 नवंबर से बचत और सोना रखने का प्रबल दौर।

रिश्ते और परिवार: 26 नवंबर तक संतान-योजना का दौर (मध्यम), फिर परिवार में शुभ आयोजन।

सेहत: स्थिर।

अच्छे दिन: 26 से 30 नवंबर।

प्रबलता: प्रबल।

दिसंबर 2027

सूर्य: 16 दिसंबर तक वृश्चिक (चतुर्थ) में, फिर धनु (पंचम) में।

अन्य ग्रह: 14 दिसंबर को बुध धनु में जाता है। 15 दिसंबर को शुक्र मकर में जाता है। 24 दिसंबर को शनि मीन में मार्गी होता है। 27 दिसंबर को मंगल मकर (छठा) में जाता है।

प्रत्यंतर: शनि।

काम: दशम पर दोहरा गोचर जारी है, इसलिए पद और पहचान का संकेत है। शनि के मार्गी होने से रुके फ़ैसले आगे बढ़ते हैं।

धन: बचत का प्रबल दौर जारी है।

रिश्ते: परिवार में सुख।

सेहत: 27 दिसंबर से गोचर का मंगल छठे भाव में ऊर्जा और रोग-प्रतिरोध बढ़ाता है।

अच्छे दिन: 24 से 31 दिसंबर।

प्रबलता: प्रबल।

14 2027 की शुभ और सावधानी की अवधियाँ

काम शुरू करना या बिज़नेस

अवधि	कारण	प्रबलता
1 जनवरी – 11 मार्च	दशमेश शुक्र का प्रत्यंतर; चल रहे प्रोजेक्ट	हल्का
15 मई – 28 जून	गोचर में सूर्य, बुध, शुक्र दशम में	मध्यम
26 अगस्त – 20 अक्टूबर	सप्तमेश शनि की दशा, सप्तम पर दोहरा गोचर; साझेदारी	प्रबल
26 नवंबर – 31 दिसंबर	दशम पर दोहरा गोचर	प्रबल

नौकरी बदलाव

अवधि	कारण	प्रबलता
25 जून – 20 अक्टूबर	नवम पर सीधा दोहरा गोचर, गोचर का गुरु लग्न में; अगली भूमिका पहले पक्की करना अनुकूल	प्रबल
26 अगस्त – 31 दिसंबर	शनि–शनि दशा, गोचर का राहु छठे में; प्रतियोगिता में बढ़त	मध्यम

विवाह और सगाई

अवधि	कारण	प्रबलता
2 जून – 20 अक्टूबर	सप्तम पर दोहरा गोचर; परिचय और बातचीत	मध्यम
26 अगस्त – 20 अक्टूबर	सप्तमेश शनि की दशा और दोहरा गोचर	प्रबल

संपत्ति, वाहन और बचत

अवधि	कारण	प्रबलता
7 अक्टूबर – 18 नवंबर	गोचर में चतुर्थेश मंगल अपनी राशि में चतुर्थ भाव में	मध्यम
26 नवंबर – 31 दिसंबर	द्वितीय पर दोहरा गोचर; बचत और सोना	प्रबल
25 जून – 20 अक्टूबर	एकादश पर दोहरा गोचर; आमदनी	प्रबल

यात्रा

अवधि	कारण	प्रबलता
24 जनवरी – 25 जून	गोचर का गुरु द्वादश में; विदेशी संपर्क और वीज़ा	मध्यम
25 जून – 20 अक्टूबर	नवम पर दोहरा गोचर; लंबी यात्रा और तीर्थ	प्रबल

पढ़ाई और परीक्षा

अवधि	कारण	प्रबलता
25 जून – 20 अक्टूबर	नवम पर दोहरा गोचर; दाख़िला, ऊँची पढ़ाई	प्रबल
20 अक्टूबर – 26 नवंबर	पंचम पर दोहरा गोचर; परीक्षा, संतान-योजना	मध्यम

धैर्य और सावधानी

अवधि	कारण	प्रबलता
10 जनवरी – 1 अप्रैल	गोचर का मंगल लग्न में वक्री; स्वभाव, ऊर्जा, रिश्ते	मध्यम
24 जनवरी – 2 जून	अष्टम पर दोहरा गोचर; बीमा, कर, सेहत की जाँच	मध्यम
17 जुलाई – 17 अगस्त	गोचर का सूर्य द्वादश में, 2 अगस्त का ग्रहण; आराम	हल्का
26 फ़रवरी – 31 दिसंबर	महादशा संधि; बड़े फ़ैसलों में धैर्य	मध्यम
9 फ़रवरी – 3 मार्च, 10 जून – 5 जुलाई, 7 – 28 अक्टूबर	बुध वक्री; अनुबंधों की दोबारा जाँच	हल्का

ऊर्जा की वापसी: 17 अगस्त – 17 सितंबर, गोचर में सूर्य और गुरु लग्न में (मध्यम)।

15 2027 के उपाय

ये पारंपरिक उपाय पूरी तरह वैकल्पिक हैं। ये मन को स्थिर करने और ग्रहों से जुड़ने के तरीक़े हैं। कोई उपाय परिणाम की गारंटी नहीं देता, और किसी वस्तु को ख़रीदना ज़रूरी नहीं है।

शनि: नई महादशा और अंतर्दशा (26 अगस्त 2027 से)

मंत्र: "ॐ शं शनैश्चराय नमः", हर शनिवार 108 बार। परंपरा में पूरा अनुष्ठान 23,000 जप का माना जाता है।

दान: शनिवार को काले तिल, सरसों का तेल, लोहे की वस्तु या कंबल, किसी ज़रूरतमंद या श्रमिक को।

व्रत: शनिवार का व्रत, जुलाई से सितंबर (संधि के शिखर) में विशेष रूप से।

रुद्राक्ष: सात मुखी, परंपरागत रूप से।

पूजा: शनिवार को हनुमान चालीसा, पीपल के नीचे दीपक, और शनि यंत्र की पूजा।

रत्न: शनि का रत्न आपके चुने हुए रत्नों में नहीं है, इसलिए मंत्र और दान ही उचित माध्यम हैं।

राहु: अंतर्दशा (26 अगस्त 2027 तक) और गोचर छठे भाव में

मंत्र: "ॐ रां राहवे नमः", शनिवार को 108 बार। परंपरा में पूरा अनुष्ठान 18,000 जप का माना जाता है।

दान: उड़द, नारियल या नीला-काला कंबल, शनिवार को।

रुद्राक्ष: आठ मुखी, परंपरागत रूप से।

पूजा: दुर्गा सप्तशती का पाठ।

रत्न: राहु का रत्न आपके चुने रत्नों में नहीं है।

गुरु: महादशा (26 अगस्त 2027 तक), जन्म कुंडली में अस्त

मंत्र: "ॐ बृहस्पतये नमः", हर गुरुवार 108 बार। पूरा अनुष्ठान 19,000 जप का माना जाता है।

दान: गुरुवार को चने की दाल, हल्दी या पीला वस्त्र, किसी शिक्षक या मंदिर को।

व्रत: गुरुवार।

रुद्राक्ष: पाँच मुखी।

रत्न: पुखराज (भाग्य-रत्न, पंचमेश होने से), सोने में, तर्जनी में, गुरुवार सुबह। परंपरा में सामान्यतः 3–5 रत्ती; सही वज़न ज्योतिषी तय करते हैं। विकल्प सुनहला या पीला टोपाज़।

विशेष सावधानी: गुरु आपका अष्टमेश भी है और जन्म कुंडली में अस्त है। *इसे पहनने से पहले किसी भरोसेमंद ज्योतिषी से सलाह अवश्य लें।*

सूर्य: लग्नेश, सूर्य प्रत्यंतर (11 मार्च – 24 अप्रैल), पिंगला योगिनी (29 नवंबर से), 2 अगस्त का ग्रहण

मंत्र: "ॐ सूर्याय नमः", रविवार को 108 बार। रोज़ सुबह ताँबे के लोटे से सूर्य को अर्घ्य। पूरा अनुष्ठान 7,000 जप का माना जाता है।

दान: रविवार को गेहूँ या गुड़।

रुद्राक्ष: एक मुखी।

यंत्र: सूर्य यंत्र।

रत्न: माणिक्य (जीवन-रत्न, लग्नेश होने से), सोने या ताँबे में, अनामिका में, रविवार सुबह। परंपरा में सामान्यतः 3–5 रत्ती। विकल्प लाल तामड़ा या लाल स्पिनेल। *पहनने से पहले किसी भरोसेमंद ज्योतिषी से सलाह लें।*

मंगल: योगकारक, मंगल प्रत्यंतर (6 जुलाई – 26 अगस्त), वक्री अवधि (10 जनवरी – 1 अप्रैल), हल्का मंगल दोष

मंत्र: "ॐ भौमाय नमः", मंगलवार को 108 बार। पूरा अनुष्ठान 10,000 जप का माना जाता है।

दान: मंगलवार को मसूर दाल या लाल वस्त्र।

रुद्राक्ष: तीन मुखी।

पूजा: हनुमान पूजा। **यंत्र:** मंगल यंत्र।

रत्न: मूंगा (भाग्य-रत्न, नवमेश होने से), सोने या ताँबे में, अनामिका में, मंगलवार सुबह। परंपरा में सामान्यतः 5–7 रत्ती। विकल्प लाल अकीक। माणिक्य और मूंगा दोनों अनामिका के रत्न हैं, इसलिए इन्हें साथ पहनने का फ़ैसला ज्योतिषी से पूछकर ही करें। *पहनने से पहले किसी भरोसेमंद ज्योतिषी से सलाह लें।*

चंद्र: प्रत्यंतर (24 अप्रैल – 6 जुलाई) और मंगला योगिनी

मोती आपके लिए उपयुक्त नहीं है, क्योंकि चंद्र आपका द्वादशेश है।

इसके बजाय सोमवार को "ॐ सोमाय नमः" का 108 बार जप, शिवलिंग पर जल, और चावल या दूध का दान।

ग्रहण के दिन (21 फ़रवरी, 18 जुलाई, 2 अगस्त)

ग्रहण काल में जप, ग्रहण के बाद स्नान, और अगले दिन संबंधित ग्रह की वस्तु का दान।

सालभर की मासिक लय

दिन	उपाय	किस अवधि में विशेष
रविवार	सूर्य अर्घ्य, "ॐ सूर्याय नमः" 108	मार्च–अप्रैल, अगस्त, दिसंबर
सोमवार	"ॐ सोमाय नमः" 108	अप्रैल–जुलाई
मंगलवार	हनुमान चालीसा, "ॐ भौमाय नमः" 108	जनवरी–मार्च, जुलाई–अगस्त
गुरुवार	"ॐ बृहस्पतये नमः" 108, व्रत	जनवरी–अगस्त
शनिवार	"ॐ शं शनैश्चराय नमः" और "ॐ रां राहवे नमः" 108, दान	पूरे साल; अगस्त से विशेष

16 यह रिपोर्ट कैसे बनी

यह रिपोर्ट आपकी जन्म तिथि (15 अगस्त 1991), समय (सुबह 06:40) और स्थान (जयपुर) से **iAstroGuru इंजन** की गणनाओं पर आधारित है। इस इंजन को भरोसेमंद संदर्भों से मिलाकर सटीकता के लिए परखा गया है।

गणना का तरीक़ा:

- लाहिड़ी अयनांश
- संपूर्ण राशि भाव पद्धति (हर राशि एक भाव)
- विंशोत्तरी दशा
- साथ में योगिनी दशा, ताजिक वर्षफल, अष्टकवर्ग, वर्ग कुंडलियाँ और 2027 के गोचर व ग्रहण

व्याख्या शास्त्रीय पाराशरी सिद्धांतों के अनुसार की गई है, और हर बात आपकी गणना की गई कुंडली से जाँची गई है।

ज्योतिष एक व्याख्या की परंपरा है। यहाँ दी गई अवधियाँ संभावनाएँ हैं, निश्चितता नहीं। इस रिपोर्ट में कुछ भी चिकित्सीय, क़ानूनी या पैसे संबंधी सलाह नहीं है। ऐसे मामलों में योग्य विशेषज्ञ से परामर्श लें।

उन्नत iAstroGuru इंजन से गणना, भरोसेमंद संदर्भों से सटीकता के लिए परखी गई।
इन गणनाओं से स्वचालित व्याख्या, हर रिपोर्ट हमारी बहु-स्तरीय गुणवत्ता जाँच से परखी गई।

Shiv Shakti Software Solutions (iAstroGuru)
Digitally signed on 31 Oct 2026, 18:49 IST
Document ID IAG-KGQ6-9WYR-CPMW